Dainik Jagran

Date: 9th January, 2017

साहित्य की कोई सीमा नहीं होती : प्रतिभा राय

■ तरुण शुक्ल, नई दिल्ली

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त ओड़िया लेखिका डॉ. प्रतिभा राय ने कहा कि साहित्य सिनेमेट्स और पौराणिकता से भी होता है। इसे सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। उन्होंने पुस्तकों की उस सोच को भी गलत करार दिया कि लेखक जगत में महिलाएं बहुत देर से शामिल हुई हैं। महिला लेखक पर रखी गई मेले की थीम 'मातृभूमि' को भी उन्होंने महिला लेखन के बजाय मातृभूमि लेखन की संज्ञा देना ज्यादा बेहतर बताया।

डॉ. प्रतिभा सत्पिकर मुख्य प्रगति मैदान के हॉल संख्या थ्रिवेनर में 25 वें विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन अवसर पर बोल रही थीं। देश में यूनेस्को संघ के प्रतिनिधित्वकर्ता के रूप में विशिष्ट अतिथि टोमास ओजलीवस्की ने प्रौद्योगिकी के दौर में भी किताबों की भूमिका को आम बताया।

केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास राज्यमंत्री महेश नाथ पांडे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक बात को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि किताबें, संगीत और कला ही इंसान को इंसान बनाती हैं वरना इंसान और रोबोट में कोई अंतर नहीं रह जाता। उन्होंने यह भी कहा कि हर साल मेले में किताबों की संख्या में इजाफा हो रहा है, इससे पता चलता है कि साक्षरता दर में भी तेजी से वृद्धि हो रही है। एनबीटी और आइटीपीओ (भारतीय व्यापार संवर्द्धन परिषद) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पी दिवसीय 25वें विश्व पुस्तक मेले का थीम इस बार महिलाओं द्वारा और उन पर आधारित लेखन 'मातृभूमि' है। 'मातृभूमि' के तहत महिला लेखन और लेखिकाओं के विशेष की प्रदर्शनी किया गया है। खास आकर्षण यह मोहन भी है जो पेंसलन बुक ट्रस्ट (एनबीटी) के 60 साल लंबे सफर को प्रदर्शित करता है। हॉल नं. 14 में बाल मंडप बनाया गया है। यहां बाल साहित्य और उससे जुड़ी गतिविधियां ही नहीं होंगी, बल्कि लेखक नागर, देवेश कुमार, अजहर हाशिमी जैसे बच्चों के लेखक बच्चों के साथ खासतौर पर करेंगे।

हॉल नं. 7, 7 ए बी सी में चीन, मिस्र, ग्रीस, जर्मनी, ईरान, जापान, नेपाल, पोलैंड, रूस, स्पेन, श्रीलंका, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को आदि अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों सहित 20 देश भाग ले रहे हैं। पुस्तक मेले के विधिवत उद्घाटन के बाद मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री महेश नाथ पांडेय ने मेले के विभिन्न स्टालों का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर एनबीटी के अध्यक्ष बलदेव भाई शर्मा, निदेशक रीता चौधरी और आइटीपीओ की कार्यकारी निदेशक सुधा सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

ठंड के बीच प्रगति मैदान में 25वें विश्व पुस्तक मेले का आगाज

केंद्रीय मंत्री ने किया उद्घाटन

प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन करने के बाद अवलोकन करने के दौरान बच्चों से बात करते केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री महेश नाथ पांडे।

ठंड पर भारी पड़ा पुस्तक प्रेम

■ जसवीत गुरु, नई दिल्ली

25वें विश्व पुस्तक मेले के पहले दिन शनिवार को पुस्तक प्रेमियों के उत्साह पर दिसंबर भारी ठंड भी बेअसर रही। हर उम्र के पुस्तक प्रेमियों को अपनी खानी संख्या मेले में देखने को मिली। पहले ही दिन पुस्तक प्रेमियों के इस उत्साह से प्रकाशक भी खुश दिखाई दिए। शनिवार सुबह हुई बारिश और उसके बाद बढ़ी ठिठुरन से ऐसा लग रहा था कि पहला दिन तो पुस्तक मेले का खाली खाली ही रहेगा। मगर ऐसा हुआ नहीं।

मेले का औपचारिक उद्घाटन सुबह 11 बजे होना था। 11 बजे से ही पुस्तक प्रेमी घुसने शुरू हो गए। पुस्तक प्रेमियों के उत्साह का इससे भी अंदाजा लगाया जा सकता है कि कार्डधेरस न्यूजप्रिंट स्टालों पर लोग घंटों की पुस्तक खोजने में लगे थे। कभी जहां कार्टून चरित्रों के साथ फोटो खिंचाने भजा आए वहीं पुस्तक-पुस्तिकाओं की कई जगह सेल्फी लेते दिखाई दिए। और तो और केंद्रीय मानव संसाधन राज्यमंत्री महेश नाथ पांडेय भी करीब दो घंटे तक मेले में घूमते रहे।

साप्ताहिक प्रकाशक के महेश भागड़ाज, पाखी प्रकाशन के अपने भाई-बहनों और वैदिक पुस्तकों के प्रकाशक एमबीटी ग्रुप की निदेशक मोनिका मनमोहक बंजारी ने पहले दिन की चहल-पहल पर खासी खुशी जताई। इन्होंने उम्मीद जताई कि छोटकर को पुस्तक प्रेमियों की संख्या में और इजाफा होगा। साथ ही पुस्तकों की बिक्री भी डीकेडाक होने की संभावना है।

पैर टूटने में समाया पूरा विश्लेषण

डिजिटल तकनीक का कमाल देखिए, अब स्कूली बच्चों को पहले के लिए भारी भरकम किताबों का बोझ उठाने की जरूरत नहीं है। महज पांच ग्राम की एक पेन ड्राइव जैसे उपकरण से मोबाइल, लैपटॉप, स्मार्टफोन टेलीविजन, पैन आदि पर कहीं भी कभी भी अपने सिलेबस की किताबें पढ़ सकते हैं। इस नई तकनीक को यहां प्रगति मैदान में चल रहे विश्व पुस्तक मेला में साथ लाई पब्लिकेशन लेकर आया है। पेन ड्राइव जाने इस उपकरण में मौजूद पहली से 12वीं कक्षाओं की सीबीएसई आधारित किताबें मौजूद हैं। केंद्रीय मानव संसाधन राज्यमंत्री महेश नाथ पांडेय मेला घूमते हुए अनेक स्टालों पर गए। इस दौरान उनको डिजिटाबी भी देखने को मिली। एमबीटी के स्टाल पर उन्होंने बच्चों-अन्य नई अवधारणा का अवलोकन आंखों पर चश्मेनुमा गैजेट्स लगाकर किया। इस अवधारणा का आधार यह है कि व्यक्ति को लगता है मानो वास्तुपुरुष उसके आसपास ही चहल-पहल कर रहा है।